परजीवियों से बचाव के लिए दिशा निर्देश

1. पशुओं के गोबर की नियमित जांच करवाएं।
2. जाँच में परजीवी संक्रमण आने पर पशु-चिकित्सक की सलाह लें।
3. चरागाहों का नियमित बदलाव व वैकल्पिक चरागाहों में पशुओं को चरने के लिए छोड़ा जाना गोल कृमियों के जीवन चक्र को तोड़ने में सहायक होता है।
4. गर्मियों व बरसात के मौसम में पशुओं को तराई के इलाकों में चरने के लिए नहीं छोड़ना चाहिए।
5. पशु व बछड़ों के आश्रयों की नियमित सफाई करना चाहिए। प्रतिदिन गोबर को इकट्ठा कर उसका कहीं दूर ढेर बना कर रखना चाहिए। इससे गोबर के ढेर में उत्पन्न होने वाली गर्मी से अण्डों व लार्वा का नाश हो जाता है।
6. तंदरुस्त पशु स्वतः ही परजीवियों से बचाव का सामर्थ्य रखते हैं। अतः पशुओं को प्रोटीनयुक्त पौष्टिक आहार खाने के लिए देना चाहिए। बछड़े रोगों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, इसलिए उनकी अधिक देखभाल करनी चाहिए।
7. कृमिनाशकों के अत्यधिक उपयोग से परजीवियों पर इसका प्रभाव पड़ना बंद हो जाता है और पशुओं पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

बाह्य परजीवियों के इलाज के लिए कीटनाशक दवाइयों का पशु के शरीर पर तथा पशुघर में छिड़काव करें। लेकिन ध्यान रहे कि सभी प्रकार के कीटनाशक जहर होते हैं, इसलिए इनका प्रयोग सावधानीपूर्वक करें। जैसे कि -

1. कीटनाशक दवाइयों की पशु-चिकित्सक द्वारा निर्देशित की गई मात्रा ही प्रयोग करें।
2. कीटनाशक दवाई पशु को लगाने के बाद उसे धूप में ना बांधें।
3. कीटनाशक दवाई लगाने के बाद पशु को नहलाना नहीं चाहिए।
4. कीटनाशक को बच्चों से दूर रखें तथा इसके खाली डिब्बों को नष्ट कर दें।
5. पशुओं को कीटनाशक दवाइयां लगाने से पहले साफ ताज़ा पानी पिलाएं।
6. कीटनाशक के प्रयोग के समय हाथों में दस्ताने, आँखों पर चश्मा व मुँह पर कपड़ा जरूर लगायें।
7. कीटनाशक का उपयोग करते समय हवा का रूख, दिन कैसा है आदि का ध्यान रखें।

अहम बात यह है कि एक स्वस्थ, साफ-सुथरे और अच्छे खिलाये-पिलाये पशु को परजीवी कम प्रभावित करते हैं। अतः पशुओं को संतुलित आहार दें और निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें-

1. कम जगह में ज्यादा पशुओं को न रखें। पशुघर हवादार होना चाहिए तथा पशु, पशुघर व इसके इर्द-गिर्द सफाई का विशेष ध्यान रखें।
2. पशुघर में पानी के निकास का प्रबन्ध रखें क्योंकि नमी की मात्रा पर कई परजीवियों का जीवन चक्र निर्भर करता है।
3. पशुघर में छिद्र या दरारें नहीं होनी चाहिए क्योंकि इनमें छिपकर मादा चिचड़ियां (कलीले) अण्डे देती हैं। इसलिए दीवारों व खुरलियों की मिट्टी/सीमेंट से पुताई कर दें।
4. पशु पर खरखरा फेरते रहने से बाह्य परजीवी कम लगते हैं।
5. पशुओं के शरीर पर लगे घाव का तुरन्त इलाज करें। घावों पर मक्खियां बैठने से कीड़े पड़ने का डर रहता है। घावों पर उचित दवाई का प्रयोग करें तथा घाव से निकले कीड़ों को मार दें।
6. समय-समय पर पशु, पशुघर तथा पशुओं के गोबर, खून व त्वचा की जाँच करवाएं।

पशु परजीवी विज्ञान विभाग, लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार-125004 (हरियाणा)